DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo- 9431537545

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

B.A, Part-II, Paper-IV (comparative government and politics)

Ref. No................. Lecture-No-25 Date 26/08/20

दल प्रणाली के रूप
(Forms of Party system)

दल प्रणाली के प्रमुखतया तीन रूप प्रचलित हैं —

1- एकदलीय
2- द्विदलीय प्रणाली
3- बहुदलीय प्रणाली

एकदलीय प्रणाली (one party system)

जिस देश में केवल एक ही दल हो और शासन शक्ति का प्रयोग करने वाले सभी सदस्य उस एक ही राजनीतिक दल के सदस्य हो, तो वहां की दल प्रणाली को एकदलीय कहा जाता है। कुछ व्यक्तियों के द्वारा यह समझा जाता है कि वर्तमान समय में एकदलीय प्रणाली केवल साम्यवादी राज्यों में ही है लेकिन वस्तुतः साम्यवादी राज्यों के अतिरिक्त अन्य अनेक राज्यों में भी इसका प्रचलन है। इस एकदलीय प्रणाली को कभी तो संविधान से ही मान्यता प्राप्त होती है जैसे कि साम्यवादी राज्यों के संविधानों में साम्यवादी दल का उल्लेख करते हुए अन्य दल के संगठनों का निषेध कर दिया गया है। अनेक बार ऐसा होता है कि संविधान के द्वारा तो अन्य राजनीतिक दलों का निषेध नहीं किया जाता लेकिन शासक दल संविधानेत्तर (Extra constitutional) उपायों से अन्य राजनीतिक दलों का ~~निषेध~~ दमन कर शासन शक्ति पर एकाधिकार स्थापित कर लेता है। इसके अतिरिक्त यदि किसी राज्य में एक से अधिक राजनीतिक दल हो, लेकिन राजनीतिक प्रभाव की दृष्टि से अन्य राजनीतिक दलों की स्थिति नगण्य हो अर्थात वैसी ही हो जैसी स्थिति द्विदलीय प्रणाली वाले राज्यों में दो के अतिरिक्त अन्य राजनीतिक दलों की होती है तो इसे भी व्यवहार में एकदलीय प्रणाली वाला राज्य ही कहा जायगा।

एक दलीय प्रणाली को सामान्यतः सर्वाधिकारवादी और जनहित विरोधी समझा जाता है। किन्तु सदैव ही ऐसा होना आवश्यक नहीं है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

और उद्देश्य की दृष्टि से भी एकदलीय प्रणाली के विभिन्न रूप हो सकते हैं। हिटलर और मुसोलिनी की एकदलीय प्रणाली का उद्देश्य सत्ता का हस्तगत करना और उस पर अपना एकाधिकार कायम रखना था लेकिन टर्की में मुस्तफा कमालपाशा की एकदलीय पद्धति निश्चय ही जन हितैषी थी। वर्तमान समय में मैक्सिको, मैडागास्कर आदि राज्यों की एकदलीय व्यवस्था को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। साम्यवादी राज्यों की एकदलीय प्रणाली को भी यदि वह सामान्य जन के हित पर आधारित है, तो कुछ हद सीमा तक इस श्रेणी में रखा जा सकता है।

माइकेल्स का अल्पतंत्र का लौह नियम— चाहे मामला लोकतांत्रिक नेतृत्व का हो या सर्वाधिकारवादी नेतृत्व का रावर्ट माइकेल्स ने यह प्रमाणित करना चाहा है कि यह सदैव एक अल्पतंत्रीय मामला रहा है। यह हमेशा थोड़े से लोगों में निहित रहा है। इसका सीधा सा कारण यह है कि सब लोगों को इसका भागीदार नहीं बनाया जा सकता। लोकतांत्रिक दलों में अल्पतंत्र का मुख्य कारण नेताओं की तकनीकी अपरिहार्यता में पाया जाता है। इस लिहाज से नेता एक अति-मानव (Superman) होता है। एक सर्वाधिकारवादी देश में विशेषतः अल्पतंत्र के हाथों में नेतागिरी आ सकती है।

ला पालोम्बरा ने अपनी कृति 'पालिटिकल डिवेलपमेंट इन नेशन्स' में राजनीतिक दलों के निम्नांकित कार्य बतलाये हैं —

1. नेताओं की भर्ती और समाजीकरण
2. राजनीतिक पहचान व मतों को संरचना रूप देना
3. सरकार बनाना
4. संघटन, सौदेबाजी व एकीकरण करना

(समाप्त)

Scanned with CamScanner